Holi Par Nibandh

प्रस्तावना:- होली भगवान कृष्ण और राधा के बीच दिव्य प्रेम का उत्सव भी है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान कृष्ण का रंग सांवला था और वह अपनी माता यशोदा से शिकायत किया करते थे। इसके अतिरिक्त राधा बहुत गोरी थीं और कृष्ण चिंतित रहते थे कि क्या वे उनके रंग के विपरीत होने के बावजूद उन्हें स्वीकार करेंगी।

इसलिए एक दिन यशोदा ने चंचलता से सुझाव दिया कि भगवान कृष्ण को राधा के चेहरे पर रंगों से रंग लगाना चाहिए ताकि उनके रंग के अंतर को दूर किया जा सके। कृष्ण ने अपनी माँ की सलाह का पालन किया और राधा के चेहरे पर रंग लगा दिया और इस तरह पूरे देश में होली का जश्न मनाना शुरू हो गया। यही कारण है कि मथुरा और वृंदावन में यह पर्व बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। यह एक फसल उत्सव भी है और वसंत के आगमन और सर्दियों के अंत का प्रतीक है।

होली से जुड़ी एक अन्य कथा राक्षस राजा हिरण्यकशिपु, उनके पुत्र प्रहलाद - भगवान विष्णु के भक्त और उनकी राक्षसी बुआ होलिका से भी जुड़ी हुई है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार हिरण्यकशिपु को यह वरदान प्राप्त था कि वह न तो किसी मनुष्य द्वारा मारा जा सकता था और न ही किसी जानवर द्वारा। वह चाहता था कि लोग उसकी पूजा करें। हालाँकि जब उनका बेटा भगवान विष्णु का भक्त बन गया और उसने हिरण्यकशिपु की पूजा करने से इनकार कर दिया, तो उसने अपनी बहन होलिका को चिता पर बैठकर उसे मारने के लिए कहा।

जब होलिका चिता पर बैठी तो उसने अपनी ज्वाला-ढाल वाली शाल ओढ़ ली और प्रह्लाद को अपनी गोद में बिठा लिया। हालाँकि, प्रह्लाद ने विष्णु से प्रार्थना करना शुरू कर दिया, जिसने हवा के एक झोंके को बुलवाया जिसने होलिका को और प्रह्लाद को शॉल से उड़ा दिया, जिससे वह बच गया और होलिता जल गई। इसलिए होली से एक दिन पहले होलिका दहन मनाया जाता है।उसके बाद, भगवान विष्णु ने नरसिंह का अवतार लिया जो आधा मानव और आधा शेर था और राक्षस राजा का वध किया। इसीलिए होली को बुराई पर अच्छाई की जीत के दिन के रूप में भी जाना जाता है।